**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट , खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **काव्यक प्रयोजन**

 **कोनो काज कें करबाक पाछू ओकर कएनिहारक कोनो ने कोनो उद्देश्य अवश्य होइत छैक | मानवक प्रत्येक प्रवृत्ति हेतुमुलक होइत अछि | इएह हेतु लोक कें काज मे प्रवृति करैत अछि | काव्यक सर्जनाक पाछू सेहो ओकर सर्जक कें कोनो ने कोनो उद्देश्य अवश्य रहैत छैक | इएह उद्देश्य काव्यक प्रयोजन कहबैत अछि आ ओहि उद्देश्य सँ प्रेरित भए कें ओ काव्यक सृजन करैत अछि | अस्तु ई कहल जा सकैत अछि जे आधुनिक शब्दावलीक अभिप्राय काव्य रचनाक आंतरिक प्रेरणा एवं हेतु छैक | संस्कृत साहित्य मे कोनो विषयक अध्ययन चारि क्रममे बताएल गेल अछि |**

 **( 1 ) प्रयोजन**

 **( 2 ) अधिकारी**

 **( 3 ) सम्बन्ध**

 **( 4 ) विषय – वस्तु | एकरा अनुबंध – चतुष्टय सेहो कहल जाइत अछि | एहि अनुबंध – चतुष्टय मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व प्रयोजने थिक | एहि हेतु संस्कृत काव्यशास्त्री लोकनिक सिद्धांत अछि “ यावत प्रयोजनं नोक्तं तावत तत्केन गृह्यते |” एक बात इहो छैक जे संसारक कोनो व्यक्तिक कार्याकार्य मे प्रवृति कारण विशेष सँ होइत अछि , किएक त मूर्ख लोक सेहो निष्प्रयोजन कोनो काज कें नहि करैत अछि , “ प्रयोजन मन दृश्य मन्दोअपि न प्रवर्तते | “**

 **भारतीय काव्यशास्त्रक प्रणेता लोकनि एहि प्रयोजन कें अपन – अपन ढंग सँ देखलनि अछि | ग्रंथक रचनाक पाछू कविक की प्रयोजन छैक एकरा विभिन्न विद्वान् अपन – अपन ढंग सँ देखैत छथि आ काव्यशास्त्र मे एकर सेहो एक सुदीर्घ परम्परा अछि | साहित्य जीवनक अभिव्यक्ति थिक आ जीवन सँ साहित्यक अभिन्न सम्बन्ध अछि | एहि हेतु जीवनेक प्रेरणा साहित्यक प्रेरणा थिक | भारतीय मनीषी लोकनि धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष – चतुर्वर्गक प्राप्ति कें जीवनक उद्देश्य कहलनि अछि | अतएव काव्यशास्त्री लोकनि कें सेहो काव्य – सर्जनक पाछू एहि चतुर्वर्गक सिद्धि रहल अछि |**

**भारतीय आचार्य लोकनि मे भरत सर्वप्रथम आचार्य छथि जे काव्य – प्रयोजनक प्रसंग अपन विचार प्रस्तुत कएलनि अछि | भरतमुनिक समय धरि नाट्य आ काव्यमे कोनो अंतर नहि छल | अतएव हुनका द्वारा जे अंतर बताओल गेल अछि ओ नाट्यक संदर्भमे अछि | मुदा काव्यक सन्दर्भमे सेहो देखल जा सकैत अछि | ‘ नाट्यशास्त्र ‘ मे ओ काव्य – प्रयोजनक उल्लेख करैत कहैत छथि –**

 **“ दुखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनां |**

 **विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद भविष्यति |**

 **धर्म्यं यशस्यमायुष्य हितं बुद्धिविवर्द्धनम |**

 **लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद भविष्यति || “**

**अर्थात ओ नाट्यशास्त्र दुखसँ , श्रमसँ , शोकसँ पीड़ित तपस्वी सभकें संसारमे सुख प्रदान करए वला होएत | एकर अतिरिक्त ओ सभ प्रकारक व्यक्तिक हेतु धर्म , यश एवं आयुक साधक , कल्याणकारक , बुद्धिवर्द्धक एवं लोकोपदेशक होएत |**

 **एहिसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे भरतमुनि काव्यक प्रयोजन दुखक हरण अथवा जनहित मानने छथि |**

 **भरतमुनिक पश्चात् भामह ‘ काव्यालंकार ‘ मे काव्यक प्रयोजन सभ पर विचार कएलनि अछि | एक कवि आ पाठक कें आधार मानि कें ओ काव्य रचनाक प्रयोजनक विषयमे कहैत छथि –**

 **“ धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचन्यं कलाषु च |**

 **प्रीति करोति कीर्ति च साधु काव्य – निबन्धनम || “**

 **ओ धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष प्राप्ति कें काव्यक प्रयोजन मानलनि अछि | एकर संग – संग कला मे विलक्षणता , कीर्ति आ प्रीति सेहो हुनका अनुसार काव्यक प्रयोजने थिक मुदा कविक दृष्टि सँ ओ काव्यक प्रयोजन कविक नाम कें अमर राखब कहलनि अछि | कवि काव्यक रचना कए कें नाम तथा अपन कीर्ति संसारमे अमर रखैत अछि | एहि प्रयोजन मे सँ कीर्तिक लाभ कवि कें आ प्रीतिक लाभ कवि आ पाठक दुनू कें होइत अछि |**

 **( क्रमश: )**